अभ्यास पत्रक

पाठ – रहीम के दोहे

नाम :- ..... कक्षा :- ..... अवधि :- ..... अनुक्रमांक :- ..... प्राप्तांक :- .....

1. दोहा पढ़िए और उत्तर दीजिए – (3 अंक)

"रहिमन निज मन की बिथा, मन ही राखो गोय।
सुनि इठलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय॥"

1. रहीम 'मन की पीड़ा' को मन में ही रखने की बात क्यों करते हैं?

उत्तर - .....

2. 'सुनि इठलैहैं लोग सब' – पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर - .....

3. इस दोहे से हमें क्या सीख मिलती है?

उत्तर - .....

2. कथन और कारण पर आधारित प्रश्न (Assertion-Reason) – (2x1=2 अंक)

4. **कथन:** रहीम ने व्यक्तिगत दुःख को सार्वजनिक करने से मना किया है।
   कारण: लोग हमारे दुःख की उपेक्षा करते हैं और केवल उपहास करते हैं।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही
5. **कथन:** रहीम के दोहे समाज के सभी वर्गों के लिए उपयोगी हैं।
   कारण: उनके दोहे केवल राजाओं और अमीरों के लिए उपदेशात्मक थे।
   (क) A: सही, R: सही और R कथन की सही व्याख्या है।
   (ख) A: सही, R: सही पर R कथन की व्याख्या नहीं है।
   (ग) A: सही, R: गलत
   (घ) A: गलत, R: सही

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए – (5x1=5 अंक)

6. रहीम के अनुसार बड़े व्यक्तियों से कैसा व्यवहार करना चाहिए?

उत्तर - .....
.....

7. 'नीच न नीचताई त्यागे' – दोहे का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....
.....

8. रहीम ने 'जल' की उपयोगिता को किस दोहे में दर्शाया है?

उत्तर - .....
.....

9. रहीम का जन्म किस कालखंड में हुआ था?

उत्तर - .....
.....

egyanarchive

10. रहीम ने अपने दोहों में किस प्रकार की भाषा शैली अपनाई?

उत्तर - .....

.....

4. लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक 2 अंक, कुल 6 अंक)

11. रहीम के दोहे छोटे होते हुए भी शिक्षाप्रद कैसे हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

12. रहीम किस प्रकार समाज को व्यवहारिक जीवन जीने की प्रेरणा देते हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

13. रहीम ने 'दीन-दुखियों' के प्रति क्या भाव व्यक्त किए हैं?

उत्तर - .....

.....

.....

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न – (4 अंक) *(उत्तर 100–120 शब्दों में दीजिए)*

14. रहीम के दोहे मानव जीवन के व्यवहारिक अनुभवों से कैसे जुड़े हैं? पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. निबंधात्मक प्रश्न – (5 अंक) *(उत्तर 160–180 शब्दों में दीजिए)*

15. "रहीम का दोहात्मक काव्य जीवन के उच्च मूल्यों का मार्गदर्शक है" – विषय पर एक अनुच्छेद लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तर कुंजी

1. क्योंकि दुनिया दुःख में सहानुभूति नहीं देती, बल्कि मज़ाक बनाती है।
2. लोग दूसरों का दुःख सुनकर उसे हल्के में लेते हैं या उपहास करते हैं।
3. हमें अपने दुःख और समस्याओं को हर किसी से नहीं बाँटना चाहिए।
4. (क)
5. (ग)
6. बड़े व्यक्तियों से विनम्रता और सावधानीपूर्वक व्यवहार करना चाहिए।
7. नीच व्यक्ति कभी अपनी स्वभावगत नीचता नहीं छोड़ता, जैसे गंदा पानी साफ़ पात्र में भी गंदा ही रहेगा।
8. "बड़ा हुआ तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर..." वाले दोहे में।
9. सोलहवीं शताब्दी में (1556 ई.)।
10. सरल, सहज, तात्त्विक और जन-मानस की बोलचाल की शैली।
11. क्योंकि उनमें जीवन की सच्चाइयाँ, नैतिक शिक्षा और व्यावहारिक ज्ञान संक्षिप्त रूप में मिलता है।
12. वे संबंधों, विनम्रता, संयम, आत्मबल और कर्तव्य जैसे विषयों पर दोहे कहकर लोगों को सही मार्ग दिखाते हैं।
13. उन्होंने दीन-दुखियों के प्रति करुणा, सहानुभूति और सेवा का भाव रखा।
14. रहीम के दोहे उनके व्यक्तिगत अनुभवों, गहन निरीक्षण और समाज के व्यवहारिक पक्ष से उत्पन्न हैं। उन्होंने जीवन के हर पक्ष – संबंध, भावनाएँ, व्यवहार, नैतिकता और समाज – को अपने दोहों में समाहित किया। "बड़ा हुआ तो क्या हुआ..." जैसे दोहे में उन्होंने व्यर्थ के अहंकार की आलोचना की है, तो "रहिमन निज मन की बिथा..." में निजी दुःखों को समझदारी से सँभालने की सीख दी है। ये दोहे मात्र उपदेश नहीं, बल्कि जीवन में उतारने योग्य सिद्धांत हैं। रहीम की रचनाएँ जीवन के अनुभवों का सार हैं, जो हर आयु वर्ग और समय में प्रासंगिक रही हैं और रहेंगी।
15. रहीम का दोहात्मक काव्य न केवल साहित्यिक दृष्टि से महान है, बल्कि वह जीवन के उच्च आदर्शों का मार्गदर्शन भी करता है। उनके दोहों में प्रेम, सहनशीलता, नम्रता, कर्तव्यबोध, आत्मसम्मान, और सामाजिक चेतना के भाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। उन्होंने दोहों के माध्यम से समाज के व्यवहारिक और नैतिक पक्षों पर प्रकाश डाला। रहीम ने अपने समय की समस्याओं को भी व्यंग्य और सीख में बदलकर प्रस्तुत किया। "एकै साधे सब सधै", "बड़ा हुआ तो क्या हुआ" और "नीच न नीचताई त्यागे" जैसे दोहे जीवन के मूलभूत सिद्धांतों को सरल भाषा में व्यक्त करते हैं। रहीम का साहित्य आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उस समय था। उनका काव्य हमें यह सिखाता है कि शब्दों की अधिकता नहीं, भावों की गहराई महत्वपूर्ण होती है। इसलिए उनका दोहात्मक काव्य केवल कविता नहीं, जीवन दर्शन है।